गुरु घासीदास

सतनाम पंथ के प्रवर्तक

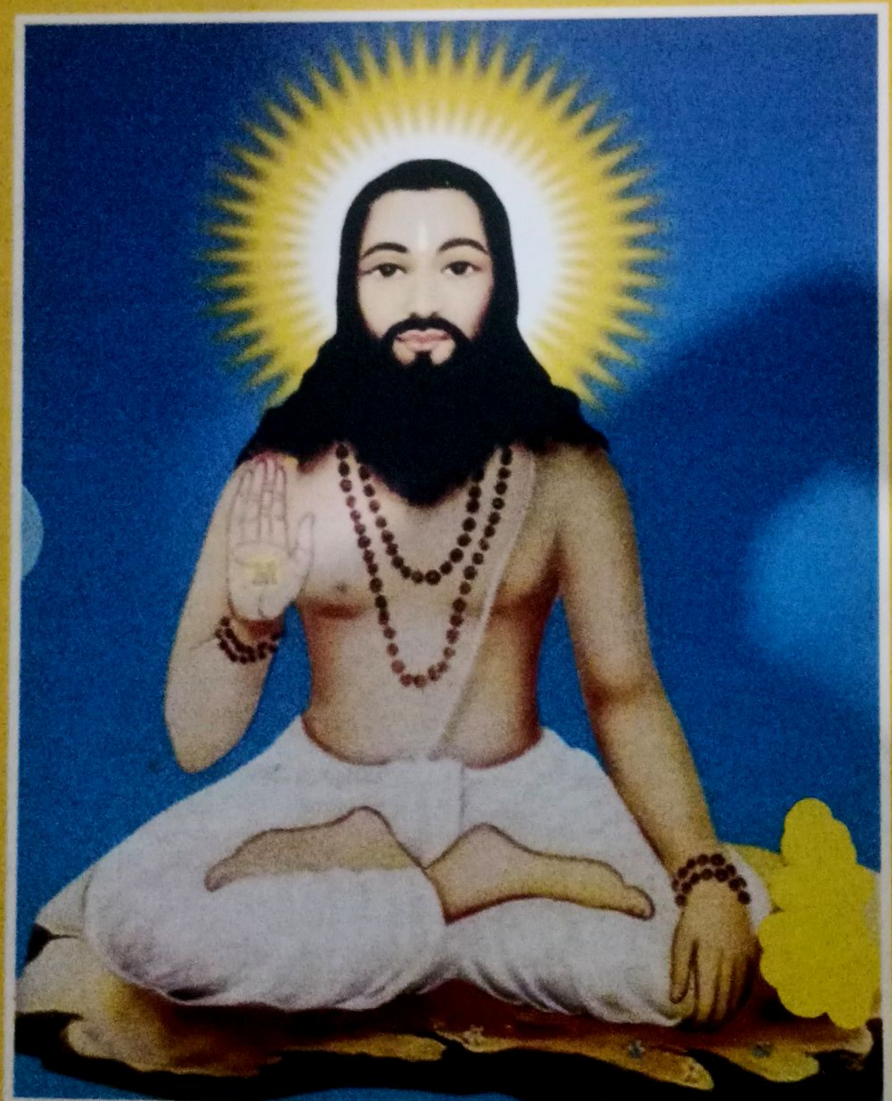

संपादक
आलोक कुमार चक्रवाल

अस्वीकरण

इस पुस्तक में लिखे और व्यक्त किए गए सभी विचार लेखकों के हैं, प्रकाशक किसी भी जानकारी की मौलिकता और पुस्तक में निहित सामग्री या पुस्तक में व्यक्त किए गए विचारों के लिए कोई जिम्मेदारी या दायित्व नहीं मानता है।

© सम्पादकाधीन

शीर्षक : गुरु घासीदास (सतनाम पंथ के प्रवर्तक)

सम्पादक : प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल

सह-सम्पादक : प्रो. प्रवीन कुमार मिश्र

संस्करण : 2023

ISBN : 978-93-95472-70-8

मूल्य : 2500/-

प्रकाशक :
किताबवाले
7/31, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002

मुद्रक :
इन-हाउस
नयी दिल्ली-110002

14

सतनाम पंथ के सांस्कृतिक आयाम एवं दर्शन

अनुपमा कुमारी*

संस्कृति का आशय संस्करण, परिमार्जन, शोधन और परिष्करण से है। मोली नावस्की के अनुसार "संस्कृति प्राप्त आवश्यकताओं की एक व्यवस्था है तथा उद्देश्यमूलक क्रियाओं की एक संगठित व्यवस्था है " यानी मानव के दैनिक क्रियाकलाप उसके मौलिक स्वभाव एवं संस्कार उसे श्रेष्ठता की ओर अग्रसर करते हैं और इसी प्रक्रिया के मध्य संस्कृति का स्वरूप निर्मित होता है। संस्कृति के स्वरूप निर्माण के मूल में सत्य तत्व ही प्रमुख आधार होता है। इस दृष्टि से देखा जाय तो प्रचलित पारंपरिक संस्कृति के अग्र में सतनाम संस्कृति का बीज विद्यमान है। चूंकि सतनाम संस्कृति पूर्णतया सत्य पर ही आधारित है और कोई भी संस्कृति सत्य से परे हो भी नहीं सकती भले ही उसमें सतत्वों के गुणात्मक एवं मात्रात्मक समावेशों में अंतर हो। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि सतनाम संस्कृति एक पुरातन संस्कृति है। हालांकि तत्कालीन समय में वह व्यवस्थित नहीं थी, परन्तु कालान्तर में पारंपरिक संस्कृति परिमार्जित होते हुए नई सतनाम संस्कृति के रूप में स्थापित हुई है। बाबा गुरु घासीदास के समय में समाज में अस्पृश्यता, ऊँच–नीच, अंधविश्वास, टोना–टोटका, बलि प्रथा जैसी कुरीतियाँ व्याप्त थीं। बाबा गुरु घासीदास ने स्वयं भी इसे झेला और तय किया कि वे समाज के लोगों को कुरीतियों और बुराइयों से बाहर निकालेंगे। अनुभूतजन्य होने के कारण ही उनके दर्शन काल्पनिक न होकर वास्तविक एवं व्यवहारिक हैं। उनका आध्यात्मिक, सामाजिक चिंतन एवं दर्शन मानवतावादी दृष्टिकोणों से भरा है। बाबा घासीदास ने सत्य को ही ईश्वर माना है। गुरु घासीदास के दर्शन को सतनाम दर्शन के नाम से आज जाना जाता है जो मूलतः गुरु घासीदास के विचारधाराओं एवं सप्त सिद्धांतों पर आधारित हैं। सत्य, अहिंसा, सदाचार, भाईचारा, समता, सहयोग, ईश्वर या सतनाम का स्वरूप गुरु घासीदास के दर्शन की सामाजिक एवं नैतिक क्षेत्र का विशेष पहलू रहा है। इस आलेख में उनके दर्शन और सतनाम संस्कृति के आयामों की संक्षिप्त चर्चा की गयी है।

सतनाम संस्कृति के विभिन्न आयाम

किसी भी धर्म, सम्प्रदाय या संस्कृति के संचालन एवं परम्पराओं के अपने–अपने सांस्कृ तिक आयाम होते हैं। सतनाम पंथ के विभिन्न सांस्कृतिक आयाम निम्न हैं–

धार्मिक संस्कार : मनुष्य ने व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन को सुव्य– वस्थित करके पूर्णता की ओर ले जाने के लिए जिन पद्धतियों या संस्थागत व्यवस्थाओं को अपनाया है, उन्हीं

* सहायक प्राध्यापक, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर

4. शुक्ल डॉ. हीरालाल.(1995).गुरु घासीदास : संघर्ष, समन्वय और सिद्धांत, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल, प्रथम संस्करण

5. घृतलहरे, डॉ. हेमंतपाल.(2007). गुरु घासीदास के उपदेशों का दार्शनिक अनुशीलन, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर

6. Shukla Dr. Hiralal, (2004), Guru Ghashidas and his Satnam Philosphy, B.R. Publishing Corporation, Delhi

7. यदु पांचजन्य (संपादक) – अस्मिता शंखनाद (पत्रिका), छत्तीसगढ़, कृष्ण सखा प्रेस, टुरी हटरी रायपुर, अंक दिसंबर 2005

8. दिव्यकार श्री डी. एल. (प्रधान संपादक), संपा. डॉ. ए.आर. बंजारे, सत्यालोक (मासिक पत्रिका) अखिल भारतीय सतनामी कल्याण समिति, छत्तीसगढ शाखा, गिरौधपुरी, अप्रेल 2001

9. कन्नौजे, मेघनाथ. (1984). माटी बोलती है, अंकुर प्रकाशन, नयी दिल्ली

10. मंडल श्री नरसिंह (संपा.) – युग पुरुष गुरु घासीदास, सतनामी मित्र प्रकाशन, रायपुर, वर्ष 18 दिसंबर 1985

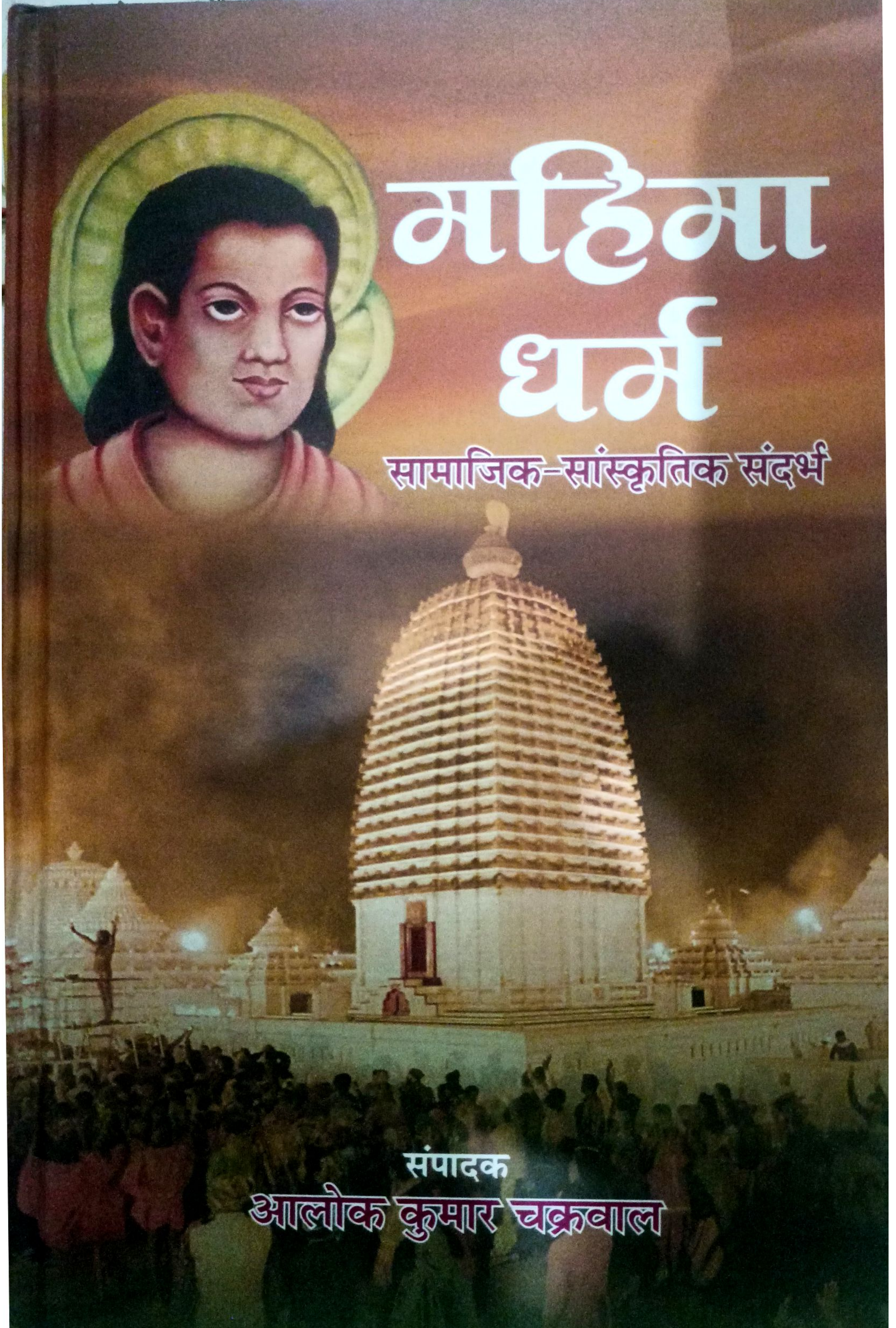
महिमा
धर्म
सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ
संपादक
आलोक कुमार चक्रवाल

अस्वीकरण

इस पुस्तक में लिखे और व्यक्त किए गए सभी विचार लेखकों के हैं, प्रकाशक किसी भी जानकारी की मौलिकता और पुस्तक में निहित सामग्री या पुस्तक में व्यक्त किए गए विचारों के लिए कोई जिम्मेदारी या दायित्व नहीं मानता है।

© सम्पादक एवं प्रकाशक

शीर्षक : **महिमा धर्म (सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ)**

सम्पादक : **प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल**

सह-संपादक : **प्रो. देवेन्द्रनाथ सिंह, डॉ. गौरी त्रिपाठी**

संस्करण : **2023**

ISBN : **978-93-95472-08-1**

Price : **2000/-**

प्रकाशक :

किताबवाले

7/31, अंसारी रोड, दरियागंज,
नयी दिल्ली-110 002

मुद्रक :

इन-हाउस (सैल्फ)
नयी दिल्ली-110 002

अनुक्रम

संदेश 5

संदेश 7

संदेश 9

सम्पादकीय 15

महिमा गुरु : धार्मिक नवजागरण का लोक स्वर

प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल

1. भीमा भोई की कविताएं (छंदानुवाद) 22
   प्रो. देवेंद्र नाथ सिंह
2. महिमा गुरु : धर्म का लोकतन्त्र 31
   अवधेश प्रधान
3. महिमा धर्म : विचार, प्रवाह एवं सामाजिक प्रभाव 42
   प्रो. परमेन्द्र कुमार बाजपेयी
4. सत्य सनातन महिमा धर्म का इतिहास 47
   अवधूत बीरेंद्र कुमार बाबा
5. महिमाधर्म में गृहस्थ आश्रम 55
   साधु निर्मायानंद दास
6. महिमा धर्म में नीति-नियम 59
   साधु विशुद्धानंद दास
7. मध्यकालीन संतों की परम्परा और भीम भोई के साहित्य में स्त्री स्वर 63
   डॉ. गौरी त्रिपाठी
8. परम्परा का अनुशीलन एवं भीम भोई का काव्य 73
   मुरली मनोहर सिंह
9. महिमा धर्म और भीम भोई : धर्मसत्ता का प्रतिपक्ष 78
   डॉ. अनीश कुमार
10. संत भाव के आदिवासी नायक 86
    डॉ. अनुपमा कुमारी

संत भाव के आदिवासी नायक

भारत मूल रूप से संतों की धरती रहा है। संतों का आशय सिर्फ धार्मिक कर्म में संलग्न साधु-महात्मा भर नहीं। कर्मयोगी संत। आध्यात्मिक चेतना से लैश संत। सामाजिक सरोकार निभाते हुए समाज और देश के बदलाव-बनाव में भूमिका निभानेवाले संत। मानव समुदाय को सृष्टि और प्रकृति से जुड़कर दुनिया को खूबसूरत बनाने का संदेशे देनेवाले संत। और इन सबसे बढ़कर मानसिक और शासकीय गुलामी से मुक्ति के लिए चेतना जाग्रत करनेवाले संत। पीढ़ियों और युगों से ऐसे अनूठे संत, इतिहास के हर कालखंड में भारत की पावन भूमि पर होते रहे हैं।

यूं तो भारतीय संत परंपरा में जातीय भावना जैसी चीज नहीं रही। फिर भी आधुनिक काल में उन्हें जातीय समूह से जोड़कर उनके आकलन या विश्लेषण का चला। उस कसौटी पर भारतीय संत परंपरा में अगर विशेष रूप से दलित संत परंपरा की बात करें तो इस समुदाय से अनेक अनूठे, विलक्षण संत हुए। मध्यकालीन संतों में कबीर, दादू, पीपा, कुम्भनदास, तुकाराम, गुरु नानक देव तथा अक्का महादेवी जैसे नाम सामने आते हैं। उसके पहले जाएं तो वाल्मीकि और वेदव्यास, दो ऐसे अनूठे ज्ञानी हुए, जिन्होंने भारत ही नहीं पूरी दुनिया को भारत के दो अनूठे लोकनायक राम और कृष्ण के रूप में दिये, जिनसे भारत की पहचान पूरी दुनिया में बनती है। उसी कड़ी में संत रैदास को सब जानते हैं, जिन्हें संत शिरोमणि की उपाधि मिली। इनमें से सभी संतों का अपना स्वतंत्र फलक रहा। सबने अपने तरीके से लोगों को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। सबको जोड़ा और संदेश दिया। इन सभी संतों का जीवन संघर्षों और चुनौतियों की महागाथा है। जन्म से लेकर आखिरी समय तक अनेक चुनौतियां इनके सामने रही। सामाजिक उपेक्षा के शिकार हुए। श्रेष्ठताबोध के अहंकार से खास वर्ग या समूह ने इन्हें प्रताड़ित किया। अपमान, तिरस्कार, उपेक्षा इनके जीवन का हिस्सा रहा लेकिन ये विचलित नहीं हुए। अपने कर्म में लगे रहे। आज हम इन सभी संतों की वाणियों से प्रेरणा लेते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. आदि अंत गीता, नव किशोर दास, कटक (1955)
2. ब्रह्म निरुपण गीता, प्राची समिति, कटक (1935)
3. अष्टक बिहारी गीता, धर्म ग्रंथ स्टोर, कटक (1955)
4. स्तुति चिंतामणि, प्राची समिति, कटक (1930)
5. बंगला भजन, उत्कल प्रिंटिंग प्रेस, कटक (1932)
6. भजन माला (दो भाग) प्राची समिति, कटक (1934)
7. निर्वेद साधना, धर्म ग्रंथ स्टोर, कटक (1955)
8. स्तुति चिंतामणि, प्राची समिति, कटक (1930)
9. भक्त कवि भीम भोई ग्रंथावली (भक्त करुणाकर साहू द्वारा संकलित, धर्म ग्रंथ स्टोर कटक (1972)

*****

भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष के जनजातीय नायक

संपादक

आलोक कुमार चक्रवाल

किताबवाले

अस्वीकरण

इस पुस्तक में लिखे और व्यक्त किए गए सभी विचार लेखकों के हैं, प्रकाशक या सम्पादक किसी भी जानकारी की मौलिकता और पुस्तक में निहित सामग्री या पुस्तक में व्यक्त किए गए विचारों के लिए कोई जिम्मेदारी या दायित्व नहीं मानता है।

© सम्पादक एवं प्रकाशक

शीर्षक : भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष के जनजातीय नायक

सम्पादक : प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल

सह-सम्पादक : प्रो. शैलेन्द्र कुमार, प्रो. प्रवीन कुमार मिश्र

संस्करण : 2022

ISBN : 978-93-90702-30-5

प्रकाशक :

किताबवाले

22/4735, प्रकाश दीप बिल्डिंग,
अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110 002

मुद्रक :

इन-हाउस (सैल्फ)
नई दिल्ली-110 002

9. स्वतन्त्रता के पश्चात् जनजातीय इतिहास लेखन की विडम्बना और एक विस्मृत नायक मोजे रिबा 69
—डॉ. शशिकान्त पाण्डेय

10. सामाजिक समावेशन तथा जनजातियाँ 76
—डॉ. शारदा दुबे, —डॉ. दुर्गा बाजपेयी

11. पूर्वी छत्तीसगढ़ में जनजातीय आन्दोलन का स्वरूप 79
—शबीना बेगम

12. जनजातीय सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत-गहिरा गुरु जी 83
—डॉ. सीमा पाल

13. लतेल सिंह मंडावी: एक गुमनाम स्वतन्त्रता सेनानी 91
—धर्मपाल कोडापा

14. बस्तर का स्वाभिमान : महानायक गुण्डाधूर 95
—डॉ. सीमा पाण्डेय, अतुल कुमार मिश्र

15. बस्तर क्षेत्र का डोंगर विद्रोह और जन जातीय चेतना 105
—डॉ. सीमा पाण्डेय

16. भूमकाल विद्रोह के जननायक गुंडाधुर का संघर्ष 11
—गणेश कोशले

17. सिद्धो-कान्हू : स्वतन्त्रता संग्राम की बुनियाद तैयार करनेवाले शूरवीर योद्धा 118
—डॉ. अनुपमा कुमारी

18. जननायक धुर्वा राव : जीवन दर्शन 122
—गोविन्द सिंह ठाकुर, डॉ. सीमा पाण्डेय

19. समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में चित्रित जनजातीय नायक तिलका मांझी 126
—अनिल कुमार ठाकुर

20. आदि विद्रोही: तिलका मांझी 133
—डॉ. अनुपमा कुमारी

21. गुण्डाधुर 139
—डॉ. गजेन्द्र कुमार, प्रीतम

17

सिद्धो-कान्हू : स्वतन्त्रता संग्राम की बुनियाद तैयार करनेवाले शूरवीर योद्धा

डॉ. अनुपमा कुमारी*

इस वर्ष भारत में आजादी का अमृत महोत्सव वर्ष मनाया जा रहा है। जब भी आजादी की लड़ाई की बात चलती है, तो 1857 के अंग्रेजों के खिलाफ हुए विद्रोह का नाम सबसे पहले सामने आता है। स्वाभाविक भी है, क्योंकि देश में पहला संगठित विद्रोह, आन्दोलन 1857 में ही हुआ। जब अलग-अलग इलाकों के नायकों ने अपने-अपने इलाके में गुलामी से मुक्ति का बिगुल बजाया तो सबके तार और छोर एक-दूसरे से जुड़ गए। देश में एकता का एक नया सूत्रपात हुआ। इसलिए ही चाहे दक्षिणपंथी इतिहासकार रहे हों या वामपंथी इतिहासकार, सबने 1857 को क्रान्ति को भारत का पहला स्वतन्त्रता संग्राम कहा लेकिन इसके पूर्व स्वतन्त्रता संग्राम की बुनियाद तैयार करने में कुछ और आन्दोलनों, विद्रोहों और उनसे जुड़े नायकों की भूमिका रही है। ऐसे ही आन्दोलनों, विद्रोहों में प्रमुखता से नाम आता है संथाल हूल का यानी संताल विद्रोह का और उसके प्रमुख नायक थे–सिद्धो-कान्हू।

झारखण्ड, आधुनिक सन्दर्भ में इस राज्य की पहचान की रेखा यहाँ के खान, खनिज, प्राकृतिक संसाधन आदि हैं। परन्तु, झारखण्ड का दायरा सिर्फ यहीं तक सीमित नहीं है। इतिहास के पन्नों को अगर पलटें, तो पता चलेगा कि यह धरती संघर्ष और सृजन की अनूठी धरती है। देसज चेतना की रक्षा के लिए संघर्ष में झारखण्ड का लम्बा इतिहास रहा है। सामुदायिक पहचान बनाए और बचाये रखने के लिए इस धरती के अनेक वीरों ने लड़ाइयाँ लड़ीं, बलिदान दिए। जल, जंगल, जमीन और जरवा की संस्कृति की रक्षा के लिए संघर्ष का एक लम्बा इतिहास रहा है, यहाँ 1857 के सिपाही विद्रोह से पहले स्थानीय या क्षेत्रीय आधार पर कई-कई आन्दोलन हुए। आदिवासियों ने शोषण, और जुल्म के खिलाफ एकजुट होकर आवाज उठायी। अंग्रेजी शासन और उनके समर्थकों के खिलाफ विद्रोह किया। जिससे जमींदार, महाजन अमला, पुलिस आदि हलाकान और परेशान हो उठे। इतिहास के पन्नों में 1789 से 1831-32 के बीच के कई छोटे-बड़े आदिवासी विद्रोहों

---

* सहायक प्राध्यापक, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

20

आदि विद्रोही: तिलका मांझी

डॉ. अनुपमा कुमारी*

यह आजादी का अमृत वर्ष है। अतीत का स्मरण कर वर्तमान में अपनी सार्थक भूमिका निभाने और भविष्य की बुनियाद तैयार करने का अवसर। अतीत का स्मरण हमें ऊर्जा देता है और प्रेरणा भी। भारतीय सन्दर्भ में कई मतभेदों के बावजूद अतीत पर चर्चिल का एक कथन हमेशा याद किया जाता है। चर्चिल ने कहा था, हमें आगे जितनी दूर जाना है, उतना पीछे मुड़कर देखना चाहिए। इस सन्दर्भ में अगर देखें तो आजादी का अमृत वर्ष तमाम तरह के आयोजनों के बीच यह एक प्रमुख अवसर है कि हम आजादी की लड़ाई में भूमिका निभानेवाले लोकप्रिय नायकों के सथ ही विस्मृत कर दिये गये नायकों का भी स्मरण करें. इतिहास जड़वत नहीं होता है, बल्कि हर कालखण्ड में उसका परीक्षण होता है। सतत सुधार इतिहास को और तथ्यपूर्ण बनाने की प्रक्रिया होती है। इस दृष्टि से देखें तो आजादी की लड़ाई में अनेक ऐसे समुदाय हैं, जिनकी भूमिका तो महत्वपूर्ण रही, पर मुख्य धारा के इतिहास में उनकी चर्चा उस तरह से नहीं होती, जिसके वे हकदार थे। ऐसा ही समुदाय रहा आदिवासी समुदाय। उस आदिवासी समुदाय में भी एक समुदाय ऐसा है, जो अपने को आदिवासी की बजाय जुगवासी कहता है। वह समुदाय है पहाड़िया समुदाय।

कहते हैं कि इस देश ही नहीं धरती के पुराने वाशिंदे हैं पहाड़िया। सरकारी दस्तावेजों में ये आदिम जनजाति कहलाते हैं पर खुद को पहाड़िया जुगवासी ही कहते हैं। इनके पुरखे बड़े लड़ाके रहे। उनकी भिड़ंत मुगलों-अंग्रेजों से हुई। मुगलों के आधिपत्य को खारिज किया और अंग्रेज इनके लड़ाके पुरखों से लड़ाई में कभी पार नहीं पा सके। पहाड़िया समुदाय के लोग अब भी पहाड़ों पर ही रहते हैं, पर नीचे जमीन पर रहनेवालों से कोई मुकाबला है, न उनकी किसी भी किस्म की तरक्की से जलन जैसा भाव। झारखण्ड के संताल परगना इलाके के सुन्दर पहाड़ी के इलाके में करीब 100 गाँवों में बसाहट है इनकी। इसे सौरिया देश भी कहते हैं। सौरिया पहाड़ियों की एक प्रमुख उपजाति है। सुन्दर पहाड़ी की कुल 67 हजार की आबादी में 16 हजार पहाड़िया ही हैं। इस समुदाय के बसेरे झारखण्ड के चार जिलों गोड्डा, साहेबगंज, दुमका, पाकुड़ के पहाड़ों पर है,

* सहायक प्राध्यापक, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

GANDHI-VINOBA

(PAST, PRESENT & FUTURE)

EDITOR

DR. MAYA S. WATANE

- **GANDHI - VINOBA**

(Past, Present & Future)

Dr. Maya S. Watane

- ***First published***, – **27th** February – **2024.**

. **© Editor & Publisher**

- **Published by**

Prof. Virag Gawande for

Aadhar Publications,

Behind Govt. VISH,

New Hanuman Nagar,

Amravati – 444 604.

- **Printed by**

Aadhar Publications,

- **Notice**

The editor, publisher, owner, printer will not be responsible for the articles published in this issue. The articles published in this issue are the personal views of the authors.

- Price : 400/-

- **ISBN-** 978-93-95494-53-3

14	Gandhian perspectiveon importance of cleanliness and how Mahatma Gandhi become a frontrunner for sanitation and cleanliness in India **Ms. Sapandeep Verma**	96
15	Beyond Fiction: Tracing Gandhian Principles in Raja Rao's Kanthapura **Dr Ritu Sharma**	103
16	Thoughts of Gandhi and Vinoba: A Comparative Study **Dr. Anupama Kumari**	115
17	आचार्य विनोबा भावे जी का 'सर्वोदय दर्शन' आज के दौर में भी प्रासंगिक **लोकेश कुमार जोशी**	123
18	महात्मा गांधी के सत्याग्रह विचार **प्रा. सचिन जयस्वाल**	133
19	वर्तमान परिपेक्ष्य मे महात्मा गांधी के सत्य और अहिंसावादी विचारोंकी प्रासंगिकता **प्रा. डॉ. राजेंद्रप्रसाद पटले**	138
20	सर्वोदय दर्शन : महात्मा गांधी और विनोबा भावे **डॉ संतोष यादव**	145
21	महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का शिक्षा पर प्रभाव **डॉ. चक्रधर ग. बागडे**	152
22	महात्मा गांधीजींच्या आर्थिक विचारांची सद्यस्थितीतील समर्पकता **प्रा.डॉ. साधना वाल्मिक पाटील**	158
23	Mahatma Gandhi's Vision and the Evolution of Panchayat Raj under the Indian Constitution **Dr. Samir Nimba Chavan**	165

Thoughts of Gandhi and Vinoba: A Comparative Study

Dr. Anupama Kumari
Asst. Professor
Dept. of Journalism and Mass Communication
Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Bilaspur

Abstract: This research paper is to bring about a comparison between Mahatma Gandhi and Vinoba Bhave. Vinoba most legitimately and appropriately claims to follow not Gandhi the man, but Gandhi the IDEA. To-day almost everyone in India concedes that Vinoba is the nearest and truest follower of Gandhi. In this research the researcher had tried to discuss about the life and works of Gandhi and Vinoba, Educational thoughts, philosophical thoughts, Ethical thoughts, Social thoughts, Economic thoughts etc. The researcher has compared the ideas of Vinoba and Gandhi with each other too much their thoughts are similar to each other and up to what extent they are different from each other.

Key Words: Education, New Talim, mother language, politics, thoughts etc.

Reasearch Methodology: Secondary data and observation method.

Ideas of Gandhi and Vinoba about Education

In the field of education, Gandhi gave importance to seven phases. From theseseven phases in his thoughts the first one is mother tongue. He said that the education given in mother tongue is always more effective and easy to pick up as compared to other languages. So "The medium of education should be mother tongue". The thought of Vinoba was quite similar to an extent but he has also talked about the education to be given in the national language of our country. In second educational thought of Gandhi, "Student should keep away from politics." because according to him education and politics had no link with each other. Vinoba has also the same thought that it is necessary to take the help of the government whenever needed for the development of education. Vinoba also discussed of some short comings in the field of education. Gandhi insisted the education of girls and women in his educational ideas. Education is the best source in his eyes, to bring a woman up since she has always lived oppressed in our society. But Vinoba has not talked at all about on this subject. Fourth, Gandhi has talked that education should be craft centered and

प्रतीक व्यक्तित्व शृंखला

हरिवंश

पत्रकारिता का लोकधर्म

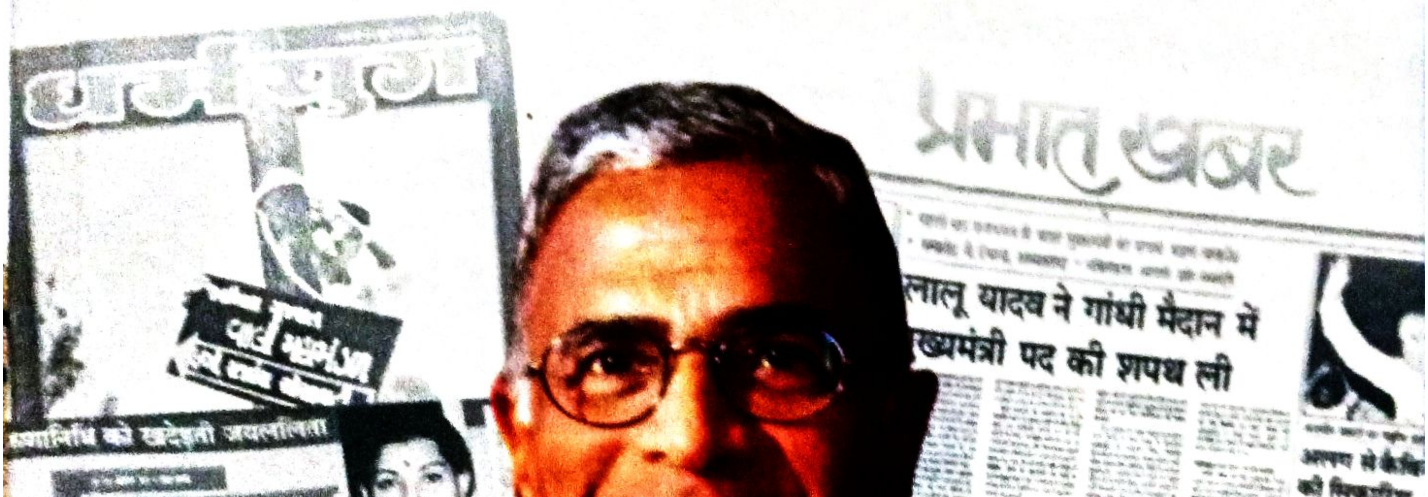

संपादक

कृपाशंकर चौबे

प्रलेक व्यक्तित्व शृंखला

हरिवंश

पत्रकारिता का लोकधर्म

संपादक
कृपाशंकर चौबे

सहयोगी संपादक
रविप्रकाश, डॉ. विनय कुमार सिंह, डॉ. अनुपमा, लोकेश

प्रलेक प्रकाशन

* सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस प्रकाशित पुस्तक का कोई भी अंश, किसी भी रूप में या किसी भी प्रकार से इलेक्ट्रॉनिक, मशीनी या फोटोकॉपी या रिकॉर्डिंग द्वारा प्रतिलिपित या प्रेषित नहीं किया जा सकता। इस पुस्तक में लिखित सामग्री लेखक के अपने विचार हैं, जिसके लिए प्रकाशक उत्तरदायी नहीं होगा।

प्रलेक प्रकाशन

PRALEK PRAKASHAN

मुख्य कार्यालय : 702, जे-50, ग्लोबल सिटी, विरार (वेस्ट), मुम्बई, महाराष्ट्र-401303
दिल्ली एनसीआर ऑफ़िस पता : 03/सी, ज्ञान खण्ड-4 इंदिरापुरम गाजियाबाद, उ.प्र. -201014

E-mail : pralek.prakashan@gmail.com
Website : www.pralekprakashan.com
दूरभाष : +91 7021263557

हरिवंश : पत्रकारिता का लोकधर्म

संपादक : कृपाशंकर चौबे

परिकल्पना : जितेन्द्र पात्रो

Harivansh :Prakarita Ka Lokdharm
Edited by Kripashankar Chaubey

Hypothesis : Jitendra Patro

ISBN : 978-93-5869-81-45

प्रथम पेपरबैक संस्करण : 2024

मूल्य : ₹ 899/-
कॉपीराइट : लेखक, संपादक, प्रकाशक
मुद्रक : रेप्रो इंडिया लिमिटेड
आवरण एवं पुस्तक सज्जा : प्रलेक स्टूडियो

***नोट : "प्रलेक व्यक्तित्व श्रृंखला"** प्रोजेक्ट का सर्वाधिकार **"प्रलेक पब्लिशिंग हाउस प्रा. लिमिटेड"** के पास सुरक्षित है। प्रलेक प्रकाशन का लोगो मिक्की पटेल की तूलिका से।

संपादकीय मर्यादा का रक्षक संपादक
गीता, उमेश आनंद : 201

हरिवंश : संपादकों की अंतिम कड़ी
डॉ. लाल बहादुर ओझा : 210

अपने आप में एक संस्था
शैलेंद्र सिंह : 213

एक दूरदर्शी पत्रकार
मृत्युंजय : 220

पत्रकार ही बनना था, पत्रकार बने, पत्रकार ही हैं
डॉ. आरके नीरद : 223

एक पाठक की दृष्टि में
डॉ. विनय कुमार सिंह : 240

गणेश मंत्री के हरिवंश
डॉ. अनुपमा : 249

हर रूप में एक व्यवहार, समान जीवन शैली
अशोक अकेला : 255

उनने कहा था...
डॉ. देवेन्द्र : 260

बलिया में जेपी, चंद्रशेखर की अगली कड़ी हैं हरिवंश
डॉ. अखिलेश कुमार सिन्हा : 267

मीडिया संस्थान से संसद तक
डॉ. नलिनी सिन्हा : 271

खंड-2
हरिवंश के आलेखों से एक चयन

जेपी का गाँव, मेरी जन्मभूमि : 277
मेरा गाँव : 281
पलाश और महुआ की धरती पर बसंत की उदासी : 302
धारा के विरुद्ध : 317
हमारी राह अलग है : 320
चुनौतियों के बीच : सफलता से ज्यादा सार्थकता के सपने : 352

गणेश मंत्री के हरिवंश

-डॉ. अनुपमा

यह पिछले साल (2022 के मध्य महीने) की बात है। एक पुस्तक का विचार आया। स्वतंत्र भारत में हिन्दी पत्रकारिता को दिशा देनेवाले, चुनिंदा यशस्वी, पुरखे पत्रकारों पर एक पुस्तक तैयार करने का विचार। अनेक नामों को सामने लिखी। एक नाम प्रमुखता से आया, गणेश मंत्री का।

गणेश मंत्री का नाम आते ही, हरिवंश जी की याद आई। 'प्रभात खबर' में हरिवंश जी के साथ काम करते हुए उनसे अनेक बार यह नाम सुनती थी। श्रद्धा के भाव से चेहरे पर उम्मीदों की चमक लिये हरिवंश जी, गणेश मंत्री का नाम लेते। हरिवंश जी से आग्रह किया कि आप गणेश मंत्री पर एक आलेख लिख देते। हालाँकि हरिवंश जी के साथ काम कर चुके साथी जानते हैं कि वह आग्रह का मौका कम देते हैं। उनके अपने लोग उनसे साधिकार ही आग्रह भी करते हैं।

हरिवंश जी ने कहा, मुझे खुशी होगी उन पर लिखकर। उन्होंने शब्द-सीमा पूछी, मैंने। उन्होंने कहा कि ठीक है, मैं कोशिश करता हूँ कि निर्धारित शब्द सीमा में उन पर लिखूँ। पर, ऐसा हो न सका। लगभग महीने दिन बाद हरिवंश जी का फोन आया। बोले, अनुपमा, मैंने लिख तो दिया, पर अनुशासन से परे जाकर। तुम्हारे द्वारा निर्धारित शब्द सीमा में नहीं लिख सका। क्योंकि, जब गणेश मंत्री पर लिखने बैठा, तो प्रवाह में लिखता गया। अब वह 100 पेज के आसपास हो गया है, जबकि तुमने दस पेज की ही बात कही थी। हरिवंश जी ने कहा कि मंत्री जी के साथ इतनी यादें हैं, इतने संस्मरण हैं, इस कदर का भाव है, उनके प्रति कि संक्षेप में लिखकर उनके व्यक्तित्व-कृतित्व को समेटना संभव नहीं हो सका।

पर, जो उन पर लिखा हूँ, तुम्हें भेज रहा हूँ, उसे भी संक्षेप ही मानकर चलो। लेख आया। स्वाभाविक तौर पर प्रवाह ऐसा कि एक बार में पूरा पढ़ ली।